International Journal of Arts & Education Research

शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता का संकट

तपेन्द्र कुमार चौधरी*[1], अजय कुमार त्रिपाठी[2]

[1]शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, म0प्र0।

[2]प्रवक्ता, एम.कैट एजूकेशन, मेरठ।

सारांश

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों अध्यापक, छात्र व पाठ्यपुस्तक में अध्यापक का स्थान काफी महत्त्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापक के निर्देशन के अभाव में सुयोग्य छात्रगण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो पाते हैं। अध्यापकगण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं। बालक की मानसिक एवं सामाजिक समस्याओं से अध्यापक का ही प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। अच्छे अध्यापक छात्रों को वांछित व्यवहार परिवर्तन में सफलता प्रदान करते हैं तथा उनको सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ने में सहायता देते हैं। शिक्षा व्यवस्था किसी भी प्रकार की क्यों न हो उसमें अध्यापक की भूमिका सर्वोपरि होती है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चारों ओर विचरण करती हैं। अध्यापक को शिक्षा व्यवस्था का प्राण कहना भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि अध्यापक ही शिक्षा व्यवस्था को जीवंत बनाता है। इसी कारण अध्यापक के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य में विशेष महत्व दिया जाता है।

प्रस्तावना

हमारा वर्तमान समाज एवं राष्ट्र परिवर्तन एवं विकास के एक नाजुक परन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में अध्यापक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। अध्यापक ही देश के भावी नागरिकों अर्थात् युवा वर्ग छात्र-छात्राओं के वास्तविक सम्पर्क में आता है तथा उन्हें अपने आचार-विचार तथा ज्ञान के अवबोध से प्रभावित करता है। अध्यापकों के ऊपर ही देश के भावी निर्माताओं को तैयार करने का उत्तरदायित्व होता है। सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास का सूत्रधार अध्यापक ही होता है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों, मूल्यों आदि का वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी अध्यापकों को ही वहन करनी होती है। वास्तव में अध्यापक गण अपने प्रयासों से भावी समाज की संरचना करते हैं। इसीलिए अध्यापकों को सामाजिक अभियंता के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। राष्ट्रीय विकास में अध्यापकों के योगदान को देखते हुए अध्यापक को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है।

प्राचीनकाल से ही समाज में अपने भावी नागरिकों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, अध्यात्मिक तथा अन्य सभी प्रकार के विकास करने का कार्य अध्यापकों को सौंपने की परम्परा रही है। अध्यापक का कार्य ज्ञान व संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तान्तरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक सामाजिक परिवर्तन भी लाना है। राष्ट्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों के लिए

सृजनशील नेतृत्व को विकसित करना तथा सामाजिक, स्वायत्तता व न्याय पर आधारित नवीन सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना भी अध्यापक समुदाय का उत्तरदायित्व है। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार ''समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहता है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी कौशलों का हस्तान्तरण के साधन के रूप में तथा सभ्यता की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता प्रदान करता है।''

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय उन सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं तथा अनुभवों का ज्ञान प्रदान करने से है जो व्यक्ति को अध्यापक के उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली ढंग से निर्वाह करने में समर्थ बनाते हैं। पहले शिक्षक शिक्षा को अध्यापक प्रशिक्षण के नाम से जाना जाता था, परन्तु अब अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित दृष्टिकोण में व्यापकता आ गयी है तथा अध्यापकों की तैयारी को व्यापक अर्थ में स्वीकार करके इसे अध्यापक शिक्षा का नाम दे दिया है। अध्यापक प्रशिक्षण शब्द से एक संकुचित व सीमित दृष्टिकोण प्रतीत होता था, अब सर्वांगीण विकास से है। अध्यापक शिक्षा का कार्यक्रम भावी अध्यापकों तथा सेवारत अध्यापकों के व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, व्यावसायिक तथा सांस्कृतिक विकास करके उन्हें अध्यापक के विभिन्न उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक व प्रभावशाली ढंग से पूरा करने के लिए केवल शिक्षण कला में निपुण बनाया जाता है बल्कि अध्यापकों को शिक्षा प्रक्रिया की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित अन्तर्दृष्टि विकसित करने के योग्य बनाया जाता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों के लिए अध्यापक शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अध्ययनरत छात्रों की विकासात्मक विशेषताओं, शिक्षा के उद्देश्यों में वैभिन्यता, पाठ्यवस्तु की प्रकृति के अनुरूप इन स्तरों के अध्यापकों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में कुछ भिन्नता का होना स्वाभाविक ही है। अतः अध्यापक शिक्षा को निम्न स्तरों में बाँटा जा सकता है-

- पूर्व प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षा
- प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षा
- माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षा
- उच्च स्तर के अध्यापकों की शिक्षा
- अध्यापक शिक्षा में स्नातकोत्तर शिक्षा तथा अनुसंधान

भारतवर्ष में अध्यापक शिक्षा की वर्तमान स्थिति अत्यन्त सोचनीय शिक्षा के कार्य में संलग्न शिक्षा संस्थाएँ भावी व कार्यरत अध्यापकों को पुरानी व घिसीपिटी शिक्षण कला की शिक्षा प्रदान करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेती है। इन संस्थाओं का एकमात्र उद्देश्य किसी प्रकार से विभिन्न प्रमाणपत्र, डिप्लोमा या उपाधियों के लिए आवश्यक औपचारिकताओं की पूर्ति कराकर प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित अध्यापक बनने का तमगा प्रदान कराना बन गया है। ये संस्थाएँ योग्य तथा शिक्षण कला में निपुण अध्यापकों को तैयार करने में पूर्णरूपेण असफल रही हैं। हमारा वर्तमान अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम अध्यापन व्यवस्था की तत्कालीन व भावी

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

आवश्यकताओं के साथ तालमेल बैठाने में असमर्थ रहा है। विषय विशेष में विकसित हो रहे नवीनतम ज्ञान तथा शिक्षण तकनीकों से अध्यापकों को अवगत कराने पर हमारे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में कोई स्थान नहीं दिया जाता है। येन-केन-प्रकारेण धनार्जन तथा पद-प्रतिष्ठा व अधिकार प्राप्ति की दौड़ में लिप्त वर्तमान समाज में अध्यापन व्यवसाय के प्रति आकर्षण अत्यन्त कम है एवं बेरोजगार व्यक्ति इसे अन्तिम विकल्प के रूप में स्वीकार करने में भी हिचकिचाते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण योग्य व प्रतिभाशाली व्यक्ति अध्यापन व्यवसाय के प्रति लालायित नहीं रहते हैं तथा प्रायः निम्नस्तरीय व्यक्ति ही अध्यापक बन रहे हैं। शिक्षा में सुधार के लिए अध्यापकों एवं उनकी शिक्षा के सम्बन्ध में सुधार लाना एक आवश्यक पूर्व शर्त होगी। वास्तव में शिक्षा की गुणवत्ता काफी सीमा तक अध्यापक ही निर्धारित करते हैं। अतः किसी भी शैक्षिक सुधार की सफलता के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाय तथा उनका समाधान खोजकर शिक्षक शिक्षा को पुष्ट किया जाय। अध्यापक शिक्षा की कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं-

- प्रवेश परीक्षा उचित मापदण्डों का न अपनाया जाना तथा इनकी वैधता, विश्वसनीयता का मानकीकृत न होना।
- प्रशिक्षण संस्थाओं का निम्नकोटि का होना।
- अनुपयुक्त पाठ्यक्रम का होना।
- सिद्धान्त व व्यवहार में पृथकता।
- प्रदर्शनात्मक या संलग्न विद्यालयों का अभाव।
- छात्राध्यापकों का नकारात्मक दृष्टिकोण।
- अच्छे शोध कार्यों का अभाव।
- दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली।
- प्रशिक्षण की अल्प अवधि।
- सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा की उपेक्षा।
- प्रशिक्षणकर्त्ताओं का अपने कार्य के प्रति उदासीनता
- अच्छी प्रयोगशाला का अभाव
- अच्छी प्रतिशत विधि-प्रविधि का अभाव
- स्ववित्त पोषित संस्थाओं की गुणवत्ता एवं प्रबन्धकीय कोटा प्रणाली
- अध्यापक शिक्षा में अलगाव
- वेतन भत्तों का आकर्षक न होना

शिक्षक क्षेत्र में प्रमुख समस्या प्रवेश की समस्या है। प्रवेश प्रक्रिया की वैधता, विश्वसनीयता सुनिश्चित होनी चाहिए। इसमें बुद्धि परीक्षा, अभिरूचि परीक्षा, भाषा में लिखित परीक्षा तथा अध्यापक मण्डल का साक्षात्कार

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

जैसी प्रक्रिया अपनानी चाहिए, जिससे योग्य एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति ही इस क्षेत्र में आ सकें। स्ववित्त पोषित संस्थानों में प्रबन्धकीय कोटा खत्म कर देना चाहिए जिससे अयोग्य लोग इस क्षेत्र में न आ सकें। शिक्षक शिक्षा संस्थाओं को उच्च कोटि के स्तर पर लाने के लिए इन संस्थाओं में केवल उन्हीं अध्यापकों की नियुक्ति की जाय जिनके पास एम.एड्. की उपाधि तथा नेट या पी.एच.डी. हो। प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रमों शिक्षण अभ्यास अध्यापन एवं मूल्यांकन की विधियों में सुधार किया जाये। इन संस्थाओं में वर्कशापों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं आदि की सुविधाओं का पर्याप्त विस्तार किया जाय। प्रत्येक प्रशिक्षण संस्था से एक प्रयोगात्मक या प्रदर्शन विद्यालय के सम्बद्ध होना अनिवार्य कर दिया जाय।

अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करते समय नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति, माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, मूल्यों का विकास, शैक्षिक तकनीक, पूर्ववर्ती शैक्षिक अनुभव, प्रेरणा व सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि की दृष्टि से छात्रों में विभिन्नताएँ एवं अध्यापकों की बदलती भूमिका को ध्यान में रखा गया है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम अध्यापकों को व्यावसायिक ज्ञान, मूल्यों व कौशलों को सघन रूप से प्रदान करने में समर्थ होना चाहिए। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम स्थानीय व क्षेत्रीय आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त लोचनीय होना चाहिए। पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक ज्ञान को व्यावहारिक उपयोग से एकीकृत करने पर जोर होना चाहिए। कार्यक्रम में व्यापक व सतत मूल्यांकन की व्यवस्था होनी चाहिए।

इस बात की महती आवश्यकता है कि सभी अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के पास अपना प्रदर्शनात्मक विद्यालय हो जिससे एक ओर जहाँ छात्रों को सघन शिक्षण अभ्यास कराया जा सके, वहीं शैक्षिक अनुसंधान व विकास के कार्यों के द्वारा नवाचारों व प्रयोगों को बढ़ावा दिया जा सके। प्रदर्शनात्मक विद्यालयों द्वारा भावी अध्यापकों को न केवल कक्षा शिक्षण में वरन् अध्यापकों के समस्त उत्तरदायित्व यथा प्रशासन, मूल्यांकन आदि में निपुण बनाने में सहायता मिलेगी तथा इन विद्यालयों में एक वर्षीय अप्रेन्टिशिप कार्यक्रम भी चलाया जा सकता है जिससे छात्र को पर्याप्त अनुभव प्राप्त हो जाय।

अध्ययन व्यवसाय को आकर्षित बनाने की आवश्यकता है जिससे योग्य समर्पित व निष्ठावान नवयुवक तथा नवयुवतियाँ अध्यापक बनने के इच्छुक हो सकें। सेवाकालीन अध्यापकगण भी प्रशिक्षण सीखने के लिए नहीं वरन् विभागीय औपचारिकता की पूर्ति या पदोन्नति की बाध्यता के लिए आते हैं। प्रशिक्षण को उनके लिए उपयोगी, आकर्षक व जीवन्त बनाकर उनका नकारात्मक दृष्टिकोण बदला जा सकता है। सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा को सुधारने तथा अधिक उपयोगी बनाने की आवश्यकता है। सेमीनार, कार्यशाला, अभिनव पाठ्यक्रमों आदि के द्वारा अध्यापकों को समय-समय पर सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में भारत में किये गये अनुसंधान कार्य का अभाव सा प्रतीत होता है। विदेशों में विशेषकर अमेरिका व ब्रिटेन में किये जाने वाले अनुसंधानों को भारतीय परिस्थितियों में दोहराना भारतीय शैक्षिक अनुसंधानकर्त्ताओं का प्रिय विषय रहा है। नितान्त मौलिक अनुसंधानों का तो भारत में अभाव रहा है। खेद का विषय है कि शिक्षा की स्नातकोत्तर व अनुसंधान उपाधियों से युक्त तथाकथित महान प्रोफेसरगण शिक्षा को कोई नितान्त मौलिक अनुसंधान नहीं दे पाये हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय परिवेश

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

के ध्यान में रखकर शिक्षा व अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान किये जायें जिससे सामान्य शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा दोनों की गुणवत्ता बढ़ायी जा सके।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए यह परम आवश्यक है कि परीक्षा प्रणाली को सार्थक बनाया जाये जिससे यह छात्राध्यापकों के शिक्षकीय गुणों एवं कौशलों का मापन एवं मूल्यांकन कर सकें तथा वास्तविक जीवन में सफल होने वाले भावी अध्यापकों को संकेत दे सकें।

अध्यापक शिक्षा अलगाव को दूर करने के लिए विभिन्न स्तरों के छात्रों के प्रशिक्षण के लिए पृथक संस्थाएँ नहीं होनी चाहिए इसके विपरीत सबको एक ही प्रशिक्षण संस्था में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कोठारी कमीशन ने इस संस्था को सघन कालेज की संज्ञा दी है। सघन कालेजों में पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में कार्य करने वाले शिक्षकों को एक ही स्थान पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इनमें छात्रों को एम.एड्. की उपाधि के लिए भी शिक्षा दी जाती है।

आज इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रबन्धन तथा विधि शिक्षा जैसे पाठ्यक्रमों की अवधि 2 वर्ष से लेकर 5 वर्ष तक है जबकि शिक्षक शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम की अवधि मात्र एक वर्ष है जिसमें प्रशिक्षण ही प्राप्त पाता है। अतः बी.एड्. एवं एम.एड्. जैसे पाठ्यक्रमों की अवधि कम से कम दो वर्ष होनी चाहिए।

इन पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण देने वालों की उदासीनता को देखते हुए उनकी जवाबदेही सुनिश्चित करनी चाहिए। वर्तमान समय में तेजी से खुल रहे स्ववित्त पोषित संस्थानों की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए छब्ज्म् ;छंजपवदंस ब्वनदबपस वित ज्मंबीमते म्कनबंजपवदद्ध को समय-समय पर इनका आकलन करके उचित कार्यवाही करनी चाहिए।

सम्पूर्ण राष्ट्र में अध्यापक शिक्षा के नियोजित तथा समन्वित विकास को सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक शिक्षा प्रणाली के मानकों व गुणवत्ता के निर्धारण व उनकी समुचित देखभाल करने के लिए एवं अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित अन्य समस्याओं पर विचार करने के लिए केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् का गठन करने का निश्चय किया है। भारतीय संसद के द्वारा पारित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिनियम, 1993 को राष्ट्रपति महोदय ने अपनी स्वीकृति 29 दिसम्बर, 1993 को प्रदान की। परिणामतः राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् एक संवैधानिक संस्था के रूप में अस्तित्व में आ सकी। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् का कार्य क्षेत्र व्यक्तियों को पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तरों पर स्कूलों में अध्यापन करने योग्य बनाने वाली शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों से है तथा इसमें अनौपचारिक शिक्षा, अंशकालीन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा तथा पत्राचार शिक्षा सम्मिलित है।

अध्यापक शिक्षा परिषद् के प्रमुख कार्य निम्नवत् हैं-

- अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित सर्वेक्षण तथा अध्ययन करना।
- अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में उपयुक्त योजनाएँ तथा कार्यक्रम बनाने के सम्बन्ध में परामर्श करना।
- देश भर में अध्यापक शिक्षा तथा इसके विकास को समन्वित करना।
- विद्यालयों में अध्यापकों की न्यूनतम योग्यताओं से सम्बन्धित दिशा निर्देश तैयार करना।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश, चयन, अवधि, पाठ्यवस्तु व परीक्षा, शिक्षण शुल्क आदि के सम्बन्ध में दिशा निर्देश तैयार करना।
- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम चलाने के लिए शिक्षण संस्थाओं को मान्यता प्रदान करना।
- अध्यापक शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान तथा नवाचार को प्रोत्साहन देना।
- अध्यापक शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोकने के उपाय करना।

स्पष्ट है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के उन्नयन की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो सकता है। यदि यह अध्यापक शिक्षा प्रदान कर रही संस्थाओं पर कड़ी नजर रख सके तथा सुविधाहीन संस्थाओं को अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम चलाने की अनुमति न दे। हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने बी.एड्. पाठ्यक्रम चलाने वाली शिक्षा संस्थाओं की मान्यता को जारी रखने के सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए निरीक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाना आवश्यक है। इसके लिए उपर्युक्त सुझावों जैसे प्रवेश प्रक्रिया का मानदण्ड, शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में उच्च गुणवत्ता युक्त स्तर बनाये रखने के लिए उनके स्तर में निरन्तर सुधार करते रहना परम आवश्यक है। इन संस्थाओं में उच्च गुणवत्ता युक्त मौलिक अनुसंधान होना चाहिए जिससे भारतीय परिप्रेक्ष्य में इन संस्थाओं से निकलने वाले उत्पाद (शिक्षक) आने वाली पीढ़ी को सही दिशा में ले जाने में सहयोग कर सकें जिससे उनमें राष्ट्रीय एकता, विश्वबंधुत्व की भावना जागृत हो सके। अगर समय रहते इस विषय पर ध्यान न दिया गया तो इन निम्न स्तर की संस्थाओं से निकलने वाले अयोग्य शिक्षक भविष्य में बच्चों के किस प्रकार की आधी-अधूरी शिक्षा देंगे स्वयं ही समझा जा सकता है। अतः इस व्यवसाय के प्रति लोगों में आकर्षण पैदा करने के लिए वेतन भत्तों व सेवा शर्तों में सुधार करना होगा जिससे योग्य तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति ही इस व्यवसाय के प्रति आकर्षित व प्रेरित हों।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

गुप्ता, एस.पी एवं अलका गुप्ता : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ शारदा पुस्तक भवन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद (2004)

लाल, रमन बिहारी : भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ रस्तोगी पब्लिकेशन गंगोत्री शिवाजी रोड, मेरठ (2004)

पाठक, पी.डी. : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-2 (2000)

कुरुक्षेत्र : शिक्षा में गुणवत्ता के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण, नवम्बर (2006) अंक-1, प्रकाशन विभाग सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लैक्स लोदी रोड, नई दिल्ली

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.